बनारस घराने के अप्रतिम तबला वादक पंडित छोटे लाल मिश्र जी के स्वतंत्र वादन में प्रयुक्त विस्तारशील रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (कायदे एवं बाँट के संदर्भ में)

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग आगरा से संगीत विषय में पीएच०डी० की उपाधि
हेतु शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

वर्षा निम

शोध निर्देशक

डॉ॰ शिवेंद्र प्रताप त्रिपाठी

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा 282005

2022

भूमिका

संगीत कला की गणना ललित कलाओं के अंतर्गत की जाती हैं ललित कलाओं के अन्तर्गत काव्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला व संगीत कला आती हैं । संगीत की व्युत्पत्ति परक अर्थ सम+गीत अर्थात सम्यक् प्रकार से गाया गया गीत हैं ।

"गीत वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते" ।

अर्थात गीत, वाद्य व् नृत्य इन तीनों कलाओं के सामूहिक रूप को ही संगीत कहा जाता हैं। संगीत के अंतर्गत ये तीनों कलाएं आती हैं। सामान्य अर्थों में गायन, वादन व नृत्य यह तीनों ही एक दूसरे के पूरक हैं।

संगीत के तीनों अंगों गायन, वादन व नृत्य में ताल का समान महत्व प्राचीन काल से ही रहा हैं। संगीत में लय नापने के साधन को "ताल" कहते हैं। लय को दर्शाने के लिए किसी क्रिया की आवश्यकता सभवत रही ही होगी। लय को काल तथा क्रिया से नियंत्रित करने पर ताल का उद्भव होता है। वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित अवनद्ध वाद्य या ताल वाद्य **तबला** है। तबला वाद्या का प्रचार प्रसार घरानों के माध्यम से हुआ और परिणाम स्वरुप तबले के ६ घराने हुए।

<u>घराना</u>- "घर" शब्द का अर्थ "वंश" या "वंश परंपरा" से है। अत: घराना "रीति अथवा "शैली" का दूसरा नाम है। किसी संगीतज्ञ द्वारा अपनी परंपरागत घरानेदार शैली का निर्माण करना एवं उन्हीं विशेषताओं को उनके शिष्य व प्रशिष्यों द्वारा अनुसरण एवं प्रचार करने से एक घराना स्थापित हुआ। परिणामस्वरूप उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबले के मुख्य रूप से छः घराने प्रसिद्ध है। जिनका वर्णन निम्नवत हैं–

1. <u>दिल्ली घराना</u>- तबले का सर्वप्रथम घराना दिल्ली घराना है इस घराने की प्रवर्तक उस्ताद सिद्धार खां दाढ़ी है। दिल्ली घराना अन्य सभी घरानों का जनक माना जाता है। दिल्ली बाज को 'किनार का बाज' भी कहते हैं। दिल्ली घराने की परंपरा में उस्ताद सिद्धार खां ढाढ़ी के अतिरिक्त उनके भाई उस्ताद चांद खां, शिष्य उस्ताद तुल्लन खां, उस्ताद रोशन खां, उस्ताद कल्लू खां, उस्ताद मीरु खां आदि सभी कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं ।

2. <u>अजराड़ा घराना</u>- यह घराना दिल्ली घराने की निकटम शाखा हैं इस गांव के निवासी उस्ताद कल्लू खां व उस्ताद मीरु खां दोनो भाई थे इन्होंने दिल्ली के उस्ताद सिताब खां से तबले की शिक्षा प्राप्त की और तत्पश्चात अजराड़ा घराने की नींव स्थापित की|

उस्ताद कल्लू खां एवम् उस्ताद मीरु खां की वंश एवम् शिष्य परंपरा के अन्तर्गत उस्ताद कुतुब खां, उस्ताद तुल्लन खां, उस्ताद घीसा खां, उस्ताद मुहम्मदी बख्श, उस्ताद चांद खां, उस्ताद काले खां, उस्ताद हस्सू खां, उस्ताद शंभू खां, उस्ताद हबीबुद्दीन खां आदि प्रसिद्ध कलाकार हुए।

3. <u>लखनऊ घराना</u>- दिल्ली घराने के प्रवर्तक उस्ताद सिद्धार खाँ ढ़ाढी के पौत्र उस्ताद मोदू खाँ बख्शू खां ने लखनऊ घराने की नींव डाली । लखनऊ घराने के कलाकारों मे उस्ताद मोदू खाँ के पुत्र जाहिद खाँ, शिष्य पंडित राम सहाय, उस्ताद मोदू खाँ के छोटे भाई उस्ताद बख्शू खाँ आदि उच्च कोटि के तबला वादक हुए।

4. <u>फर्रुखाबाद घराने</u>- लखनऊ के प्रवर्तको में से एक उस्ताद बख्शू खाँ ने फर्रुखाबाद के प्रतिभाशाली युवक उस्ताद विलायत अली खां को तबले की श्रेष्ठ शिक्षा दी। लखनऊ घराने की शिक्षा प्राप्त कर अपने घर फर्रुखाबाद वापस आकर उस्ताद विलायत अली खाँ साहब ने फर्रुखाबाद घराने की नीव डाली। फर्रुखाबाद घराने के कलाकारों में उस्ताद हाजी विलायत अली खान के ज्येष्ठ पुत्र उस्ताद निसार अली खां तथा उनके शिष्यों में उस्ताद निसार अली खां, उस्ताद अमान अली खां, उस्ताद हुसैन अली खां, उस्ताद नन्हे हुसैन खां, उस्ताद मुनीर खां, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद शमशुद्दीन खां आदि गुणी कलाकार हुए।

5. <u>बनारस घराना</u>- लखनऊ घराने के प्रवर्तक उस्ताद मोदू खां के शिष्य पंडित राम सहाय मिश्र को बनारस घराने का प्रवर्तक माना जाता है। पंडित राम सहाय जी ने मोदू खां से तबले की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत बनारस आकर बनारस घराने की नीव रखी। बनारस घराने के प्रमुख कलाकारों में पंडित जानकी सहाय, पंडित भैरो सहाय, पंडित गोकुल मिश्र, पंडित रघुनाथ, पंडित विश्वनाथ, पंडित भगवान प्रसाद, पंडित वीरु मिश्र, पंडित बिक्कू महाराज, पंडित गामा महाराज, पंडित अनोखे लाल मिश्र, पण्डित छोटे लाल मिश्र, पंडित गुदई महाराज, पंडित कंठे महराज आदि सर्वश्रेष्ठ कलाकार हुए।

6. <u>पंजाब घराना</u> - अन्य सभी घरानों का संबंध दिल्ली घराने से माना जाता है परंतु पंजाब घराना एक स्वतंत्र घराना है। इस घराने के प्रवर्तक पखावज वादक उस्ताद लाला भवानी दास थे। यह घराना प्राचीनतम घराना माना जाता है। इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार उस्ताद फकीर बख्श, पखावज वादक पंडित अयोध्या प्रसाद, उस्ताद अल्ला रक्खा, उस्ताद ज़ाकिर हुसैन आदि सर्वश्रेष्ठ कलाकार हुए।

<u>संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण</u>- उपरोक्त विषय से संबंधित पूर्व में हुए शोध - कार्यों की जानकारी हेतु शोधार्थी ने संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया । जिसमें विभिन्न पुस्तकें, पत्र -पत्रिकाएं, शोध प्रबंधन आदि का अध्ययन किया, जो इस प्रकार है–

<u>पुस्तकें</u>-

- ताल वाद्या शास्त्र एक विवेचन

  लेखक– मनोहर, डॉ भालचंद्र राव मराठे

- तबला पुराण

  लेखक– मिश्र, पंडित विजय शंकर

- तबला एक समग्र वाद्या स्वतंत्रत वादन एवं संगति

  लेखक- चौधरी, डॉ० सीमा

- तबला विशारद

  लेखक- त्रिपाठी, डॉ० शिवेन्द्र प्रताप

<u>शोध प्रबंध</u>

- तबला के बनारस घराने की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

  शोधकर्ता– त्रिपाठी, डॉo शिवेंद्र प्रताप, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़), 2008

- पंडित गुदई महाराज का तबला वादन के क्षेत्र में योगदान

  शोधार्थी– सेठी, रेखा, दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा, 2016

- तबला जगत में बनारस घराने की विशेषताएं एवं प्रभाव

  शोधार्थी– श्रीवास्तव, सावित्री, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 1995

- तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन

  शोधार्थी– सिंह, ज्योति, दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा, 2021

- तबले के बनारस–दिल्ली घराने की वादन शैली एवं विशिष्ट रचनाओ का तुलनात्मक अध्ययन

  शोधकर्ता– श्रीवास्तव, प्रभाकर लाल, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़), 2009

<u>पत्रिकायँ</u> – **संगीत कला विहार**

- संगीत के युगपुरुष– पंडित अनोखेलाल मिश्र

  लेखक– ऋषितोष, डॉ० कुमार, मार्च 2007

- घराना: एक अध्ययन

  लेखक– मिश्र, विजय शंकर, दिसंबर 2008

- स्वर्गीय सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज के न होने का अर्थ

  लेखक– मिश्र, पंडित विजय शंकर, जुलाई –2007

- वत्सल गुरुवर पंडित अनोखेलाल मिश्र

  लेखक– मिश्र, पंडित छोटे लाल, मार्च– 2007

अतः शोधार्थी ने जिस विषय का चयन किया उस विषय के सर्वेक्षण से जो सामग्री प्राप्त होती है वह चयनित विषय से आंशिक रूप से संबंधित है, उपरोक्त विषय के संबंध में पूर्ण रूप से जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा वश शोधार्थी ने “**बनारस घराने के अप्रतिम तबला वादक पंडित छोटे लाल मिश्र जी के स्वतंत्र वादन में प्रयुक्त विस्तारशील रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (कायदे एवं बांट के सन्दर्भ में)”** विषय का चयन किया I अतः यह विषय सर्वथा नवीन विषय है।

<u>समस्या कथन</u>– 'बनारस घराने के अप्रतिम तबला वादक पंडित छोटे लाल मिश्र जी के स्वतंत्र वादन में प्रयुक्त विस्तारशील रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (कायदे एवं बांट के सन्दर्भ में)'।

<u>शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या</u>–

- **अप्रतिम**– अति प्रसिद्ध, श्रेष्ठ, विशेष, विशिष्ट।
- **वादन**– मानक विशाल हिंदी शब्द के अनुसार- कहना, बोलना, बाजा बजाना।
- **शैली**– भाषा शब्दकोश के अनुसार- ढंग, प्रणाली, प्रथा, तरीका, रीति, पद्धति।
- **परंपरा**– लोकभारती प्रमाणिक हिंदी कोष के अनुसार- वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप हो, किसी घटना, कार्यपद आदि का बहुत दिनों से चला आया।
- **विश्लेषण**– मानक विशाल हिंदी शब्दकोष के अनुसार– किसी चीज के अंगों को या उसके अलग अलग गुणों को स्पष्ट करना ।

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u>– प्रस्तुत शोध-कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार से है-

(1) तबले के बनारस घराने की शैली का अध्ययन करना ।

(2) पंडित छोटे लाल मिश्र जी के जीवन-वृत का अध्ययन करना |

(3) पंडित छोटे लाल मिश्र जी के वादन में प्रयुक्त कायदे और बांट विस्तृत अध्ययन करना |

(4) पंडित छोटे लाल मिश्र जी की वादन शैली में प्रयुक्त अन्य रचनाओं का अध्ययन करना |

<u>परिसीमांकन</u>– शोध कार्य की समय सीमा को देखते हुए प्रस्तुत-शोध कार्य बनारस घराने के प्रख्यात तबला वादक पंडित छोटेलाल मिश्र जी के 20 कायदे एवं बांट का विश्लेषणात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

<u>अध्ययन विधि</u>– प्रस्तुत शोध-कार्य वर्णनात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, सर्वेक्षण विधि, साक्षात्कार विधि के माध्यम से संपन्न किया जाएगा ।

<u>अध्ययन के स्रोत</u>– प्रस्तुत शोध-कार्य पुस्तकालय, शोध पत्रिकाओं, दृश्य–श्रव्य सामग्री, कलाकारों व विद्वानों से विचार-विमर्श तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा।

<u>अध्ययन की रूपरेखा</u>– प्रस्तुत शोध-कार्य को निम्न प्रकार से सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया जाएगा–

भूमिका- (संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण)

प्रथम अध्याय- तबले का बनारस घराना।

- बनारस एक परिचय
- बनारस घराना - एक परिचय
- बनारस घराने की शिष्य परंपरा
- बनारस घराने की वादन शैली की विशेषताएं

द्वितीय अध्याय– पंडित छोटेलाल मिश्र जी का जीवन-परिचय |

- पारिवारिक पृष्ठभूमि
- शिक्षा दीक्षा
- शिष्य परंपरा
- पुरस्कार एवं सम्मान

तृतीय अध्याय– पंडित छोटेलाल मिश्र जी की वादन शैली

- स्वतंत्र तबला वादन की शैली
- संगति की शैली
- विभिन्न विद्वानों के साथ संगति

चतुर्थ अध्याय- पंडित छोटेलाल मिश्र जी के वादन में प्रयुक्त कायदे का विश्लेषण

- कायदा– व्याख्या एवं महत्व
- कायदे का विश्लेषण

पंचम अध्याय– पंडित छोटेलाल मिश्र जी के वादन में प्रयुक्त बांट का विश्लेषण

- बांट– व्याख्या एवं महत्व

• बांट का विश्लेषण

षष्ठम् अध्याय पंडित छोटेलाल मिश्र के वादन में प्रयुक्त अन्य रचनाओं का प्रतिलेखन

उपसंहार

<u>शोध कार्य का महत्व</u>– प्रस्तुत शोध-कार्य तबले के प्रसिद्ध कलाकार पंडित छोटेलाल मिश्र जी के बनारस घराने की परंपरा से संबंधित है परंतु इनकी शैली में प्रचुरता एवं भिन्नता देखने को मिलती है, किंतु इनके वादन में प्रयुक्त कायदे एवं बांट के विषय में कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं हुई। अतः शोध छात्रा द्वारा किया जा रहा है यह शोध कार्य सर्वधा नवीन है तथा इस शोध-कार्य के माध्यम से भविष्य में विद्यार्थियों को पंडित छोटेलाल मिश्र जी द्वारा बजाए गए पारंपरिक एवं घरानेदार कायदे एवं बांट सविस्तार प्राप्त हो सकेंगे ।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

क्रम स०	**पुस्तकों का नाम**	**लेखक का नाम**
1	तबले का उद्गम विकास एवं वादन शैलियां	शुक्ल, डॉ० योगमाया
2	ताल-कोष	श्रीवास्तव, गिरीश चंद्र
3	तबला पुराण	मिश्र, विजय शंकर
4	पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ	मिस्त्री, डॉ० आबन ई०
5	तबला विशारद	त्रिपाठी, डॉ० शिवेन्द्र प्रताप
6	ताल वाद्या शास्त्र एक विवेचन	मनोहर, डॉ० भालचंद्र राव मराठे

सम्बंधित प्रश्नावली–

- बनारस घराने की वादन शैली की क्या क्या विशेषताएं है।
- बनारस घराने की शिष्य परंपरा में वर्तमान में किन किन लोगो का नाम आता हैं।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी जन्म कब हुआ।

- पंडित छोटेलाल मिश्र जी वादन की क्या क्या विशेषताये हैं।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी ने किन किन कलाकारों के साथ संगत की है।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी किस प्रकार के कायदों का वादन किया करते थे।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी किस प्रकार के बाँट का वादन किया करते थे।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी के स्वरचित कायदे।
- पंडित छोटेलाल मिश्र जी की शिष्य परंपरा में वर्तमान में किन किन लोगो का नाम आता हैं।